रस

रस का स्वरूप एवं परिभाषाएँ :--

रस का व्यवहार बहुत प्राचीन काल से होता आया है। यहाँ तक की 'वैदिक साहित्य' में भी 'सोमरस' शब्द का प्रयोग मिलता है। 'उपनिषद' के अंतर्गत 'ईश्वरीय अनुभूति' ही रस है। जिसे प्राप्त करके आत्मा आनंदित हो जाती है। साहित्य शास्त्र के ग्रंथों में रस का पहला उल्लेख आचार्य भारतमुनि के नाट्यशास्त्र में सबसे पहले हुआ।

काव्य को पढ़ने-सुनने अथवा नाटकों को देखने से प्राप्त होनेवाला आनंद 'रस' कहा गया है। भारतीय साहित्यशास्त्र में काव्य का मूल प्रयोजन इसी रस रूप आनंद की प्राप्ति है। इसकी धारणा बड़ी प्राचीन है और इस की महिमा बड़ी व्यापक। रस की आवश्यकता और महत्ता के संबंध में चाहे हम जागरुका न हो, पर जीवन की गति यह प्रकट करती है कि रस जीवन का सार है और जीवन रस के लिए है। जितने भी क्रिया-कलाप हैं उनकी प्रेरणा और लक्ष्य उनका प्रारंभ और अंत रस में ही है। चाहे उसके मध्य में हम बहल भले ही जाए । अर्थात हम कह सकते है कि जीवन को जीवन बनाने के लिए रस अनिवार्य है। इसको छोड़कर जीवन का कोई उद्देश्य नहीं चलता है। रस को हम छोड़ नहीं सकते और जब हम उसे छोड़ देंगे तब जीवन जीवन नहीं रह जाएगा |

परिभाषाएँ :--

इस रसको अनेक विद्वानों में परिभाषाओं में बाँधने का प्रयास किया है।

आचार्य विश्वनाथ :-- "आस्वाद्यते इति रसः" अर्थात "रस वह है जो आस्वादित किया जाए।"

रस शब्द का शास्त्रीय विवेचन सबसे पहले भरतमुनिने अपने नाट्यशास्त्र में किया। भरतमुनि का रस संबंधी मूल सूत्र इस प्रकार है।

आचार्य रामचन्द्र गुणचन्द्र :-- "सुखदुखात्मकों रसः" अर्थात रस सूखात्मक भी है और दुखात्मक भी है।

भरतमुनि :-- " विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पत्तिः" अर्थात विभाव अनुभाव व्याभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।" भरतमुति को ही रस का आदय प्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने ही सबसे पहले रस को काव्य की आत्मा घोषित की। अन्य सभी आचार्य भी रस को ही काव्य की आत्मा मानते हैं।

आचार्य विश्वनाथ :--   आचार्य विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण में प्रस्तुत अपनी परिभाषा में रस के स्वरूप को विस्तार से स्पष्ट किया है। उनके अनुसार "विभाव अनुभाव और संचारी भावों के संयोग में व्यक्त होकर सहृदय के हृदय में स्थित राति आदि स्थायीभाव भी सत्त्व प्राप्त कर देते है। सत्त्व उद्रेक के कारण यह रस अखंड, अद्वितीय, आनंदमय स्वयंप्रकाश स्वरूप, चिन्मय आता है।

इस परिभाषा से निम्नलिखित तत्त्व सामने आते है।

- ★ रस आस्वाद रूप है।
- ★ उसका अविर्भाव सत्त्व उद्रेक की स्थिति में होता है।
- ★ वह अखंड होता है।
- ★ वह अनन्य साधारण अर्थात अद्वितीय है।
- ★ वह स्वयंप्रकाशित आनंद है।
- ★ वह चिन्मय अर्थात चेतनाशील है।
- ★ वह अलौकिक है।
- ★ वह ब्रहमानंद के समान है।

दिन हाता हा

आचार्य रामचंद्र शुक्ल :-- आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार " जिस भाँति आत्मा की मुक्तावस्था, ज्ञानदशा कहलाती है। उसी भाँति हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है।"

परिभाषा

आचार्य धनंजय :-- आचार्य धनंजय के अनुसार "विभाव, अनुभाव, सात्त्विक, साहित्य भाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से आस्वाद्यमान स्थायी भाव ही रस है।"

डॉ. विश्वम्भर नाथ :-- "भावों के छंदात्मक समन्वय का नाम ही रस है।"

रस के अंग

रस जीवन का सार है। समस्त जीवन रस के लिए हैं। भारतमुनि ने रससंबंधी सुत्र दिया है-- "विभानानुभाव व्याभिचारि संयोगाद्रस निष्पत्तिः।" उन्होंने अपनी परिभाषा में विभाव, अनुभाव और व्याभिचारि भावों का उल्लेख किया है। इसके अलावा स्थायी भावों को उन्होंने महत्त्वपूर्ण स्थान दिया।

अ] स्थायी भाव :-- आचार्य मम्मट ने स्थायी भाव को ही रस माना है। रस का आधार स्थायी भाव है। मनुष्य हृदय में स्थित मनोविकारों को स्थायी भाव कहा जाता है। मानव हृदय के ये मूल भाव है और इनसे कोई भी सहृदय अछूता नही रह सकता। सहृदय के हृदय में ये भाव सदा विद्यमान रहते है तथा उन्हें कोई विरोधी भाव डरा नहीं सकता। स्थायी भाव की विशेषताएँ निम्नानुसार है–

स्थायी भाव की विशेषताएँ :--

- स्थायी भाव रस का मूल है। – आचार्य विश्वनाथ ने स्थायी भावों को कंद या मूल कहा है। जिसप्रकार बीज या मूल अंकुरित होकर वृक्ष बनता है। उसी प्रकार स्थायी भाव रस में परिणत हो जाता है।
- स्थायी भाव चित्त में बहुत समय तक स्थिर होकर निवास करते है। दूसरे भावों में इनकी जैसी स्थिरता नहीं होती।
- स्थायी भाव मनुष्य के चित्त कि भावना अथवा संस्कार है। ये सभी मनुष्य में उसी प्रकार छिपे रहते है जैसे मिट्टी में गंध छिपी रहती है।
- कोई विरोधी भाव इन्हें छिपा नहीं सकता।
- स्थायी भाव अन्य भावों को भी अपने में विलीन कर लेता है।

स्थायी भावों की संख्या नौ मानी गयी है और उनसे नौ रसों कि निर्मिति हो जाती है जो निम्नानुसार है।

1] रति (शृंगार रस) :-- स्त्री-पुरुष का पारस्पारिक अनुराग / प्रेम रति के अंतर्गत माना जाता है। जब यह रति भाव अभिव्यक्त होता है तब शृंगार रस कहलाता है।

2] हास (हास्य रस) :-- वाणी हावभाव, विचित्र क्रियाएँ, रूप कि विचित्रता द्वारा जब हंसी आती है तो उसे हास्यरस कहते है। हास इसी रस का स्थायी भाव है।

3] शोक (करूण रस) :-- शोक को करुण रस का स्थायी भाव माना गया है। किसी अनिष्ट घटना या विनाश, या किसी प्रिय व्यक्ति कि मृत्यू के कारण शोक निर्माण होता है। स्थायी भाव शोक की अभिव्यक्ति होती है तब करुण रस की निर्मिति होती है।

4] क्रोध (रौद्र रस) :-- अन्यायपूर्ण या अनुचित कार्य करनेवाले व्यक्ति के प्रति जब क्रोध उत्पन्न होता है तो रौद्र रस का निर्माण होता है।

5] उत्साह (वीर रस) :-- जब किसी अच्छे कार्य को हर्ष या आवेश में आकर किया जाता है तो वहाँ उत्साह नामक स्थायी भाव का निर्माण होता है। इसका रस वीर है।

6] भय (भयानक) :-- विनाश की स्थिति जब आती हैं या अनिष्ट की आशंका या व्याकुलता, भय की अभिव्यंजना करती है। तब भय नमक स्थायी भाव भयानक रस में परिवर्तित हो जाता है।

7] जुगुप्स (बीभत्स रस) :-- घृणा पैदा करनेवाली वस्तु देखकर हमारे मन में निर्माण होनेवाला भाव जुगुप्स कहलाता है यह भाव बिभत्स रस का स्थायी भाव है।

8] विस्मय (अद्भुत रस) :-- अद्भूत या चमत्कारभूत वस्तु या दृष्टि को देखने से जो भाव उपन्न होता है उसे विस्मय कहते है। इसका रस अद्भूत है।

9] निर्वेद (शांत रस) :-- निर्वेद शांत रस का स्थायी भाव माना जाता है। सांसारिक जीवन से मनुष्य मुक्त होकर ज्ञान हासिल करना चाहता है तो शांती की आवश्यकता पड़ती है। मन में विरक्त, निर्वेद भाव आएगा तभी हमें शांतरस की प्राप्ति होगी।
कुछ विद्वान रसों की संख्या 11 मानते है – वात्सल्य रस और भक्ति रस । उसका स्थायी भाव रति ही है।

आ] विभाव :-- विभाव का अर्थ कारण है। विभाव का शाब्दिक अर्थ है 'विशेष भाव' | सहृदय में वासना या संस्कार के रूप स्थित स्थायी भावों को जागृत करनेवाले कारण 'विभाव' कहलाते है। अर्थात स्थायी भाव को जागृत करने का कारण विभाव है।
इस विभाव के दो भेद है –
1] आलंबन विभाव
2] उद्दीपन विभाव

1] आलंबन विभाव ::-- जिस आलम्बन (सहारा) के कारण हृदय में स्थित भाव जागृत होते है उसे आलम्बन विभाव कहते है। जैसे शेर को देखकर भय नामक स्थायी भाव का जागृत होना स्वाभाविक है। अत: शेर आलम्बन है क्योंकि शेर के कारण ही भय नामक स्थायीभाव जागृत होता है। आलम्बन विभाव के दो भेद है –

- विषयालंबन :-- जहाँ विषय के आलम्बन से रस की उत्पत्ति हो वहाँ विषयालंबन होता है ।
- आश्रयालंबन :-- जिस पात्र में भाव जागृत होता है वह आश्रयालंबन कहलाता है। आश्रय के द्वारा रस निष्पत्ति होती है । उदा:- दुष्यंत के द्वारा शकुंतला को तपोवन में एकांत में देखकर शकुंतला के प्रति दुष्यंत के हृदय में रति भाव जागृत हो जाता है। यहाँ शकुंतला आलम्बन है क्यों कि उसी को कारण उसी के प्रति दुष्यंत के हृदय में सही भाव जागृत हुआ है। दुष्यंत यहाँ आश्रय है।

2] उद्दीपन विभाव :--- जिन वस्तुओं या स्थिति को देखकर रति आदि भाव उद्दीप्त या तीव्र होने लगते है जैसे -- चंद्रोदय, कोकिल कूजन, एकांतस्थल, रमणीकउद्यान आदि।
प्रत्येक रस के अपने विशिष्ट उद्दीपन होते हैं – जैसे शृंगार के लिए चंद्रोदय तथा शांतरस के लिए तीर्थाटन धर्मोपदेश आदि।
उद्दीपन विभाव के दो प्रकार माने गए है–
1] आलम्बन की चेष्टाएँ
2] बाह्य वातावरण से संबंधित वस्तुएँ उन दोनों को क्रमशः विषयगत और बहिर्गत भी कहा गया है।

इ] अनुभाव :-- अनुभाव का व्युत्पत्ति मूलक अर्थ है --अनु- पीछे (पीछे उत्पन्न होने वाला अर्थात विभाव के बाद उत्पन्न होने वाला) स्थायी एवं संचारी भावों के उदय होने के पश्चात जो शारीरिक एवं मानसिक विकार उत्पन्न होते है। उन्हें अनुभाव कहते है। भरतमुनि अंगसंचलन के द्वारा जो उत्पन्न होते है उसे अनुभाव कहते है।"
आचार्य विश्वनाथ ने लिखा है- " आलंबन, उद्दीपन आदि अपने-अपने कारणों से उत्पन्न भावो बाहर प्रदर्शित करनेवाली संसार में जो कार्य रूप चेष्टा होती है, वहीं काव्य और नाटक आदि में बंधकर अनुभाव कहलाती है।
उदा- जैसे विरह व्याकुल नायक द्वारा सिसकियाँ भरना, मिलन के भावावेश में अश्रु, स्वेद, रोमांच, अनुराग सहित देखना, कोध जागृत होने पर शस्त्रसंचलन, कठोर वाणी, आँखो लाल होना आदि अनुभाव कहे जाएंगे।
अनुभावों के चार भेद है—
1] आंगिक / कायिक
2] वाचिक
3] आहार्य
4] सात्विक
1] आंगिक / कायिक अनुभाव :-- शरीर संबंधी चेष्टाएँ या हावभाव आंगिक या कायिक अनुभाव कहलाती है। उदा. क्रोध करने पर पात्र को मारना।
2] वाचिक अनुभाव :-- आश्रय की वाणी से जो कुछ भी व्यक्त होता है उसे वाचिक अनुभाव कहते है।

3] आहार्य अनुभाव :-- कृत्रिम वेषभूषा की रचना को आहार्य अनुभाव कहा जाता है। मन में उत्पन्न भावना के अनुकूल भिन्न-भिन्न प्रकार की वेश-भूषा धारण करना आहार्य अनुभाव है।
4] सात्विक अनुभाव :-- सात्विक भावों से उत्पन्न अनुभाव ये सात्विक भाव अथवा सहज अंग होते हैं। ये सात्विक भाव 9 माने गए है -- स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, (गदगद होना) वेपथु,(कंप) अश्रु, वैवर्ण्य, (मुँह का रंग उड़ जाना) प्रलय (निश्चेष्टता), जुम्भा, (मुँह को खोलना)

इन्हें सात्विक इसलिए कहा गया है कि अंतःकरण के सत्व से उत्पन्न होते है और इनका अभिनय विशेष मनोवेगों से होता है–

ई] व्याभिचारी / संचारी भाव :-- व्याभिचारी भाव को संचारी भाव भी कहा जाता है। जो भाव हमारे हृदय में नित्य विद्यमान रहते है उन्हें स्थायी भाव कहा जाता है परंतु कुछ भाव ऐसे होते है, जो केवल थोड़ी देर के लिए स्थायी भाव को पुष्ट करते है और तुरंत लुप्त भी होते है वे ही संचारी भाव है। उदा- जैसे लहरे समुद्र में पैदा होती है और उसी में विलीन हो जाती है वैसे ही संचारी भाव विलिन हो जाते हैं।

संचारी शब्द का अर्थ है- साथ-साथ चालना अथवा संचरनशील होना। संचारीभाव स्थायी भावों के साथ संचरित होते है। इसीलिए इनका नाम संचारी भाव है। ये संचारी भाव प्रत्येक स्थायी भाव के साथ उसके अनुकूल बनकर चल सकते है। अर्थात एक ही संचारी भाव अनेक स्थायी भावों के साथ रह सकता है इसीलिए इसे व्याभिचारी भाव कहा गया है।
उदा -- उदासिनता यह संचारी भाव शृंगार, रौद्र, आदि एक से अधिक रसों के साथ रह सकता है।

भारतीय परंपरा के आचार्यों ने संचारी या व्याभिचारी भावों की संख्या 33 मानी है। जैसे –
1] निर्वेद (उदासिनता) 2] ग्लानि (अनुत्साह और शैथिल्य) 3] शंका 4] असूया (ईर्ष्या, डाह) 5] मद 6] श्रम (इष्ट की प्राप्ति के लिए) 7] आलस्य 8] दैन्य (दैन्यता) 9]] चिंता 10] मोह 11] स्मृति 12] धृति (इच्छा की निवृत्ति) 13] व्रीड़ा (लज्जा) 14] चापल्य (चपलता) 15] हर्ष 16] आवेग (मन की व्याकुलता) 17] जड़ता 18] गर्व 19] विषाद (उत्साह भंग) 20] औत्सुक्य 21] निद्रा 22] अपस्मार (मृगी, मिरगी) 23] सुप्त (स्वप्न) 24] विबोध/ प्रबोध (जगाना) 25] अमर्ष (अपमान आदि से उत्पन्न कोप) 26] अवहित्था (छिपाव) 27] उग्रता 28] मति 29] व्याधि 30] उन्माद 31] मरण 32] त्रास 33] वितर्क (संदेह के कारण उत्पन्न ऊहा (विचार)

इस प्रकार हम रसागों का विवेचन कर सकते हैं। विभाव अनुभाव संचारि भाव और स्थायी भाव इन अंगों के संयोग से रस निष्पत्ति होती है।

टिपाणियाँ

श्रुंगार रस :--

श्रुंगार शब्द शृंग और आर के योग से बना है और उसका अर्थ है 'काम की वृद्धि' यह उत्तम प्रकृतिवाला रस कहा गया है। इसका वर्ण उज्ज्वल या श्याम है। शृंगार रस में स्थायी भाव रति या प्रेम रहता है। अर्थात नायक-नायिका का पारस्पारिक प्रेम, आलंबन नायक-नायिका महत्त्वपूर्ण होते हैं। उद्दीपन विभाव के अंतर्गत नायक और नायिका की एक-दूसरे के बीच प्रेमसचक चेष्टाएँ, उद्यान, कुंज, चंद्र, वसंतऋतु पंछियों की चहचहाट का समावेश हो जाता है। अनुभाव के अंतर्गत सस्नेह एक-दूसरे की तरफ देखना, कटाक्ष, चुंबन, आलिंगन, आदि बाते आ जाती है।

संचारी भाव के अंतर्गत प्रमुख रूप से हर्ष, लज्जा, उत्सुकता, चिंता, शंका आदि बाते आ जाती है।

स्थायी भाव	:-- रति
विभाव	:-- आलंबन - नायक-नायिका
अनुभाव	:-- प्रेमभरी बातें, कटाक्ष, चुंबन, स्नेह आदि
उद्दीपन	:-- उद्यान, कुंज, चंद्र, वसंतऋतु पंछियों की चहचहाट, एकांत आदि
संचारी भाव	:-- हर्ष, लज्जा, उत्सुकता, चिंता, शंका आदि

शृंगार रस को दो प्रकार पाए जाते है --

- संयोग शृंगार = संयोग शृंगार का लक्ष्मण और उर्मिला के प्रेमसंबधी उपस्थित किया हुआ उदाहरण ---

हाथ लक्ष्मण ने तुरंत बढ़ा दिये
और बोले एक परिरंभन प्रिये
सिमट सी सहसा गयी प्रिय की प्रिया
एक तीक्ष्ण अपांग ही उसने दिया। "

इस उदाहरण में लक्ष्मण आश्रय है, उर्मिला आलंबन है। एकांत स्थान और उर्मिला का कटाक्ष उद्दीपन विभाव है। लज्जा और हर्ष संचारीभाव है। अत: शृंगार रस की संपूर्ण सामग्री इस उदाहरण में है इसीलिए इस उदाहरण में शृंगार रस हा मिलता है।

➢ **वियोग शृंगार :--** इसमें मिलन का अभाव रहता है। इसे विप्रलंभ शृंगार भी कहते है। यह कई प्रकार का होता है -

- पुर्वानुराग -- मिलन के पूर्व का वियोग
- मान – मिलनके बीच का वियोग
- प्रवास – परदेश गमन
- करुणात्मक – वियोग पराकाष्ठा तक पहुँच जाता है।

उदा . " बिन गोपाल बैरनी भई कुंजे
तब ये लता लगति अति शीतल
अब भई विषम ज्वाल की पुंजै "

इस उदाहरण में गोपियाँ आश्रय है, श्रीकृष्ण आलंबन है। कुंज उद्दीपन विभाव है। दु:ख पीडा उदासीन ये भाव संचारी भाव है। अत: शृंगार रस की पूर्ण सामग्री इस उदाहरण में है।

वीर रस :--

शत्रु का उत्कर्ष, देश, जाति, धर्म की दुर्दशा अपना पराभव इत्यादि के कारण उत्तम प्रकृति के व्यक्ति में इनको मिटाने के लिए अपना पुरुषार्थ दिखाने का जो उत्साह निर्माण होता है वहीं वीर रस का मूल कहा गया है। वीर अनेक प्रकार के होते है— युद्धवीर,दानवीर, दयावीर, धर्मवीर, कर्मवीर आदि। यहाँ हम केवल युद्धवीर का उदाहरण देखेंगे। इसके उपकरण निम्न है --

स्थायी भाव :-- उत्साह
विभाव :-- दीन, याचक, पर्व आदि
अनुभाव :-- उत्साहपूर्ण वचन, बाह फड़कना, आक्रमण आदि
उद्दीपन :-- शत्रु की चेष्टाएँ, याचक की दीनता, धर्म का नाश
संचारी भाव :-- हर्ष,गर्व, उग्रता, आवेग आदि

उदा -- "जगी उसी क्षण विदयुत ज्वाला
गरज उठे होकर वे कृद्ध
आजकल के भी है विरुद्ध
युद्ध युद्ध बस मेरा युद्ध।"
– मैथिलीशरण गुप्त

इस उदाहरण में राम के उत्साह आश्रय है। मेघनाद आलंबन है। शक्ति से मूर्छित लक्ष्मण का निश्चेष्ट शरीर ऊद्दीपन है। राम का गरजना अनुभाव है। गर्व, उग्रता आदि संचारीभाव है। वीररस की सभी सामग्री इसमें होने के कारण यह वीररस का सुंदर उदाहरण है।

करुण रस : –

शृंगार की भाँति यह रस भी रसराज कहे जाने का दावा करता है । भवभूति ने इसे प्रधान रस बताया है। "एको रसाः करुण" एवं इसमें सहानुभूति के अधिक्य के कारण इसको श्रेष्ठता दी है।
प्रिय व्यक्ति, इष्ट वस्तु, अथवा वैभव आदि के नष्ट होने पर और अप्रिय व्यक्ति या अनिष्ट वस्तु की प्राप्तिकर जो क्लेष या शोक होता है, उसकी व्यंजना से करुण रस की उत्पत्ति होती है। इसके उपकरण निम्न है --
स्थायी भाव :-- शोक
विभाव :-- शोक निर्माण करनेवाला पात्र
अनुभाव :-- रोना, छाती पीटना, भाग्य को कोसना आदि
उद्दीपन :-- जिस व्यक्ति के बारे में शोक किया जाता है उस व्यक्ति से संबन्धित वस्तुएँ, मृत व्यक्ति
का दाह संस्कार आदि
संचारी भाव :--, चिंता, मोह, आवेग, स्मृति, ग्लानी आदि
उदा. - "फिर पीटकर सिर और छाती अश्रु बरसाती हुई।
कुकरी सद्र्श सकरुण गिरा से भी दैन्य बरसाती हुई।"

गदय में भी करूण रस के बड़े सुंदर उदाहरण मिलते है-- हिताश्रय के सदाह के समय मैया कहती है-- ".........हाय! जिन हाथों से मिठी-मिठी थपकियाँ देकर रोज सुलाती थी। उन्हीं हाथों से आग से धगधगती चितापर, कैसे रखूँगी? जिसके मुँख में छाले पड़ने के भय से मैंने गरम दूध भी नहीं पिलायाँ उसे हाय ...... ।"
यहाँ करूण प्रसंग का हृदयद्रावक चित्रण हुआ है अतः यहाँ करुण रस की निर्मिति होती है।

हास्य रस :--

हास्य शृंगार का सहायक तो है ही कभी कभी वीर रस का भी पोषक होता है। किंतु इसका स्वतंत्र अस्तित्व भी है। विकृत आकार, चेष्टा, वेश, वाणी, वक्रता, इत्यादि के दर्शन या वर्णन से हास्य रस कि उत्पत्ति होती है। इसके उपकरण निम्न है।
स्थायी भाव :-- हास
विभाव :-- विकृत आकार, विचित्र पोशाख, वाणी की वक्रता आदि
अनुभाव :-- मुख का विकास, व्यंग्यवचन आदि
उद्दीपन :-- हास्यजनक चेष्टाएँ
संचारी भाव :-- हर्ष, चपलता, स्मृति आदि।

आलंबन के आधार पर हास्य के आत्मस्थ और परस्थ ये दो भेद किए जाते है –
उदा. "आगे चले बहुरी रहुराई
पीछे लारिकन धुरी उड़ाई"
इसमें परिहासमय अनुकरण दिखाया गया है।

रौद्र रस :--

अन्यायपूर्ण या अनुचित कार्य करनेवाले व्यक्ति के प्रति जब क्रोध उत्पन्न होता है तो रौद्र रस निर्माण होता है ।

स्थायी भाव :-- क्रोध
विभाव :-- आलंबन, विपक्षी, शत्रु,देशद्रोही दुराचारी आदि
अनुभाव :-- लाल नेत्र, कठोर वचन, गर्जन-तर्जन आदि
उद्दीपन :-- अपराध
संचारी भाव :-- उग्रता, आवेग, चपलता, गर्व
उदा. " श्रीकृष्ण केनसुन वचन
अर्जुन क्रोध से जलने लगे
शोक अपना भूलकर
करतल युगल मलने लगे। "

इसमें स्थायी भाव क्रोध है। आलंबन शत्रु है। उद्दीपन कृष्ण के वचन है। अनुभव हाथ मलना और संचारी भाव आवेग और उग्रता है।

भयानक रस :--

किसी भयंकर पशु या वस्तु को देखने से शक्तिशाली विरोधी से काम पड़ने पर अथवा अपराध के लिए दंड पाने की कल्पना से मन की व्याकुलता का वर्णन किया जाता है।

स्थायी भाव :-- भय
आलंबन विभाव :-- भयंकर दृश्य, निर्जनता, निःसहायता आदि
अनुभाव :-- कंप, पलायन, वैवर्ण्य आदि
उद्दीपन :-- उद्दीप्त करनेवाली स्थिति
संचारी भाव :-- त्रास, चिंता, आवेग, दैन्य, मरण आदि

उदा. " एक ओर अजगर रही
एक ओर मृदुराई
बिकल बटोही बीच ही
परयो मूर्च्छा खायी। "

यहाँ स्थायी भाव भय है।आलंबन विभाव अजगर है, सिंह है। उद्दीपन विभान दोनों ओर से उनका आगमन, अनुभाव मूर्च्छा आना। संचारी भाव मरण। इन सब के संयोग से भयानक रस की व्यंजना होती है।

बीभत्स रस :--

अपवित्र अप्रिय, अनिष्ट, घृणित के दर्शन या श्रवण से मन में जो जुगुप्स सा भाव उत्पन्न होता है, उसी से बीभत्स रस का निर्माण होता है। |

स्थायी भाव :-- जुगुप्स
आलंबन विभाव :-- घृणास्पद वस्तु, रुधिर मांस आदि
अनुभाव :-- मुँह बिघड़ना, आँखे फेर लेना।आदि
उद्दीपन :-- दुर्गंध, कीड़े-मकौड़े
संचारी भाव :-- ग्लानी, व्याधि, उन्माद, आवेग, मरण

उदा. " सिरपर बैठ्यो काग, आँख दोउ निकारत खात।
खिंचत जीभ ही स्यार, अति ही आनंद उर धरत। "

इस उदाहरण में आलंबन विभाव काग और मृत शरीर है। उद्दीपन विभाव काग का लाश को नोंच-नोंच कर खाना है। अनुभाव, नाक सिकुड़ना, दुर्गंध है और संचारी भाव ग्लानी, व्याधि है।

अद्भुत रस :--

किसी आश्चर्यजनक विचित्र या अलौकिक वस्तु के दर्शन से मन का जो विकास अथवा विस्तार होता है। उसे अद्भुत रस कहते है। इसकी सामग्री इस प्रकार है–

स्थायी भाव :-- विस्मय
आलंबन विभाव :-- असाधारण घटना
अनुभाव :-- स्तब्ध रहना, रोमांचित होना, आँखे फैलाना आदि
उद्दीपन :-- विस्मयजनक वस्तु का स्वरूप, दर्शन आदि
संचारी भाव :-- वितर्क भ्रांति, हर्ष, आवेग, औत्सुक्य आदि

उदा. " सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है। "

यहाँ स्थायी भाव विस्मय है। आलंबन विभाव द्रौपदी के सारी का विस्तार है। उद्दीपन विभाव सारी का निरंतर बढ़ना। अनुभाव नेत्रों का विस्फ़ारित होना। संचारी भाव औत्सुक्य, हर्ष आदि ।

शांत रस :--

भरतमुनि ने पहले आठ ही रस माने बाद में शांत रस को उन्होंने प्रधानता दी। तत्वज्ञान तथा वैराग्य के कारण जब चित्त शुद्धि एवं मोक्ष की अभिलाषा जागती है तो आध्यात्मिक ज्ञान में प्रवृत्त कराने का उत्कर्ष भाव 'शांतरस' कहलाता है। इसके उपकरतण है :--

स्थायी भाव	:-- निर्वेद
आलंबन विभाव	:-- अनित्य रूप, संसार का ज्ञान, परमार्थ चिंतन
अनुभाव	:-- रोमांच, अश्रु, पश्चाताप, ग्लानी आदि
उद्दीपन	:-- तीर्थस्थान, पुण्याश्रम, सत्संग एकांत भक्ति आदि
संचारी भाव	:-- मति, स्मृति, हर्ष आदि

उदा. " मन फुला फिरे जगत में कैसा नाता रे
हाड़ जरे जस लकड़ी, केस जरै जस घाँस ।
सोने जैसी काया जरी गयी,
कोई न आए पास "

यहाँ स्थायी भाव निर्वेद है, आलंबन मृत व्यक्ति है। उद्दीपन विभाव मन का फूलना और घूमना है। अनुभाव मानसिक अनुभूति, संचारी भाव निर्वेद उदासी आदि।

वात्सल्य रस ::--

इसको दसवाँ रस माना गया है। लेकिन उसे रस के रूप मान्यता बहुत बाद में मिली। वात्सल्य रस के बारे में भी विद्वानों में मतभेद है। संतान के प्रति प्रेम को वात्सल्य कहते है। बालसुलभ चपलता, बच्चों का सौंदर्य, उनकी तुतली बोली और चेष्टाओं को देखकर जो उनकी ओर हमारा मन का आकर्षण होता है। उस आकर्षण जन्य स्नेह से वात्सल्य रस की उत्पत्ति होती है। उसके उपकरण है --

स्थायी भाव	:-- अपत्य स्नेह/ राति
आलंबन विभाव	:-- बालक
अनुभाव	:-- हँसना, पुलकित होना, चूमना, खेलना
उद्दीपन	:-- संतान की चेष्टाएँ
संचारी भाव	:-- हर्ष, मोह, चिंता आदि

उदा. " शोभित कर नवनीत लिए
घुटरन चलत रेणु तन मंडित
मुख दधि लेप किए।

इस उदाहरण में वात्सल्य रूप की पूर्ण सत्ता है। इस उदाहरण में कृष्ण आलंबन है। यशोदा आश्रय है। कृष्ण का घुटनों पर चलना, उनका धुलयुक्त होना उद्दीपन विभाव है। यशोदा मैया को आनंद होना तथा मुस्कुराना अनुभाव है। उत्सुकता, बालचपलता, आदि संचारी भाव है।

भक्तिरस:--

भक्तिरस को भरतमुनि ने शांत रस के अंतर्गत माना है। इसमें बाधा केवल उतनी ही है कि शांत में केवल वैराग्य रहता है और भक्ति में राग (अनुराग) यह अनुराग केवल ईश्वर के प्रति रहता है। भक्ति में तन्मयता होती

है। इसलिए भक्तों में इसे स्वातंत्र स्थान दिया गया है। वैष्णव आचार्यो ने इसे मुख्य रस माना है। लेकिन आज कल के मनोवैज्ञानिकों ने इसे शृंगार के अंतर्गत माना है।

भक्ति को इस मानने में कुछ आक्षेप है ...

1] भक्ति एक मूलभाव नहीं है और ना ही उसकी भावना अधिक व्यापक है।
2] निर्जिव मूर्ति के प्रति इसमें आग्रह होता है। अत: उसमें तीव्रता नहीं होती।
3] भक्ति का अंतर्भाव अन्य रस में हो सकता है फिर नवीन रसों की कल्पना निरर्थक है।
4] भक्ति को रस स्वीकार करना याने परंपरा का विरोध करना है क्योंकि भरतमुनि ने इसको रस स्वीकार नहीं किया है। इस रस के उपकरण निम्नानुसार है—

स्थायी भाव	:-- इष्ट देव के प्रति प्रेम
आलंबन विभाव	:-- भगवान के अवतार, राम कृष्ण आदि।
अनुभाव	:-- नेत्र विकास, गदगद होना, रोमांच
उद्दीपन	:-- अवतार के कार्य
संचारी भाव	:-- हर्ष, निर्वेद, मति, उत्सुकता

उदा. " तु दयालू दिन दानी हो
हे प्रसिद्ध पातकी पाप ही पुंजहारी ।"

इस पद में ईश्वर के प्रति स्थायी भाव है। राम आलंबन है, दया, करुणा उद्दीपन विभाव है। कवि के गीत भरे कथन अनुभाव है। दीनता, हर्ष, संचारी भाव है। अत: यह भक्तिरस का उत्तम उदाहरण है।